प्लेटो का आदर्श राज्य और कविता

डॉ. नरेन्द्र सिंह
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष - हिन्दी विभाग
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

प्लेटो का जन्म ई.पू. 428 में हुआ था। प्लेटो के माता-पिता दोनों के परिवार एथेन्स के सुप्रसिद्ध परिवार थे। उनका जन्म 'एथेंस' में हुआ था या 'एजिना' में यह पता नहीं है। उनके गुरू और उस समय के सुप्रसिद्ध महान दार्शनिक सुकरात (Socrqtes) उनकी माँ के परिवार के मित्र थे, इसलिए सुकरात उनके निकट भी थे। सुकरात पर शासन ने युवाओं को पथभ्रष्ट करने का आरोप लगाकर मृत्युदण्ड की सजा सुनाई थी। प्लेटो ने अपने गुरू को जेल से 'भगाने' की पूरी व्यवस्था कर ली थी, पर सुकरात ने उनके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया और कहा कि मैं राज्य के कानून को नहीं तोड़ सकता, भले ही मैं अपराधी नहीं हूँ। और उन्होंने जेल से भागने की बजाय जहर पीने की सजा स्वीकार की। प्लेटो पर अपने गुरू के जीवन मूल्यों ने काफी प्रभाव डाला। उस समय प्लेटो को सक्रिय राजनीति से विरक्ति हो गई और वे एथेन्स छोड़कर मिस्र, सिसली, इटली और यूनान के अन्य स्थानों की यात्रा पर निकल गए। इस दौरान उन्होंने यूरोपीय समाज की विलासिता और जीवन मूल्यों के पतन को प्रत्यक्ष देखा। एथेन्स लौटकर उन्होंने अपने देश में जीवन मूल्यों की स्थापना की। इस 'अकादमी' को यूरोप का पहला विश्वविद्यालय माना जा सकता है। इसमें प्लेटो ने 40 वर्षो तक काम किया, जिसमें वे दर्शन विज्ञान और राजनीति पर अपने विचार रखते रहे। उन्होंने ज्ञान-विज्ञान संबंधी विविध विषयों पर अपने विचार 'संवाद' (Apologia) और आलेख (Epistles) में व्यक्त किए। 'संवाद' की संख्या 23 है और 'आलेखों' की संख्या 13 है।[1] इनमें प्लेटो का चिन्तक एवं दार्शनिक पक्ष प्रखरता से सामने आता है ।

इन संवादों में 'पोलिटिया' (द रिपब्लिक) 'नोमोइ' (लॉज) और 'आयोन' अधिक महत्वपूर्ण है । कलाओं के संबंध में प्लेटो के विचार 'आयोन' और 'रिपब्लिक' में मिलते हैं । काव्यशास्त्र पर प्लेटो ने अलग से कुछ नहीं लिखा, 'राज्य' व्यवस्था पर अपने विचार व्यक्त करते हुए ही उन्होंने कवि, कलाकार और उनकी कलाओं पर अपना मत व्यक्त किया है। वे राजनीति, शासन व्यवस्था और नैतिक मूल्यों के संदर्भ में ही 'कविता' पर विचार करते हैं । प्लेटो का बचपन एथेंस और स्पार्टा के युद्ध की उन्हीं भयानक घड़ियों में व्यतीत हुआ, अतः उनके चिन्तन और दिशा और दशा को समझने के लिए यह पृष्ठभूमि महत्वपूर्ण है। उनके जन्म से चार वर्ष पूर्व स्पार्टा का आक्रमण हुआ और 23 वर्ष की आयु में उसने अपने गणराज्य की लज्जाजनक पराजय देखी। डॉक्टर देवेन्द्रनाथ शर्मा का इस सम्बन्ध में मत प्लेटो की धारणाओ, पूर्वाग्रहों और जीवन-मूल्यों को समझने के लिए बहुत तर्कसंगत समाधान प्रस्तावित करता है। वह कहते हैं :

स्पार्टा के बाहुबल के सामने जब एथेंस ने घुटने टेके होंगे तो भावुक, चिन्तनशील प्लेटो पर इसका क्या प्रभाव पड़ा होगा, यह सहज अनुमेय है। निसर्गतः कवि और कला-प्रेमी प्लेटो की अपने आदर्श राज्य के

कवियों के बहिष्कार की बात अटपटी सी लगती है। आलोचकों ने प्लेटो के कवि विरोधी दृष्टिकोण का केवल उल्लेख कर दिया है परन्तु किसी ने इस विरोधाभास का समाधान प्रस्तुत नहीं किया। हमें इसका समाधान एथेंस की उपर्युक्त पराजय में मिला। काव्य और कला को शौर्य-वीर्य के विकास में बाधक मानकर ही प्लेटो ने कवियों के बहिष्कार की बात की।

इसका दूसरा आधार इस पराजय के पॉच वर्ष बाद 399 ई.पू. में सुकरात को एथेंस में मृत्यु दण्ड दिया जाना स्वीकार किया जा सकता है। सुकरात प्लेटो के गुरू थे। सुकरात बुद्धि और तर्क को सर्वोपरि मानते थे। अपने जीवन में वह पूरी तरह रूढ्विरोधी थे। ज्ञान और सत्य का अनुसंधान उनका एकमात्र जीवन-लक्ष्य था। आचार में वह उपयोगितावाद के अनुयायी थे। अज्ञान, अन्धविश्वास और पाखण्ड के वह विरोधी थे। उन्होंने युवकों में साहस, स्वातन्त्र्य और सन्देहवाद की भावना भर दी थी। अन्त में उन पर इन्हीं कारणों से अभियोग चलाया गया और निर्णायक-मण्डल के बहुमत ने उन्हें मृत्यु दण्ड दिया। मृत्यु समय तक निश्चल व उल्लासपूर्ण सुकरात युवकों को उपदेश देते रहे और अपने विचारों पर अडिग बने रहे। यह स्वाभाविक ही था कि जीवित सुकरात की अपेक्षा मृत सुकरात का प्रभाव यूनान में और भी अधिक बढ़ गया। सुकरात के साथियों व शिष्यों ने उनकी मृत्यु के लिए निरंकुश तथा विवेकहीन लोकतन्त्र को कभी क्षमा नहीं किया ।

इस दूसरे प्रभाव के संबंध में डॉ. शर्मा का मत है कि-

एथेंस की पराजय और सुकरात के मृत्युदण्ड ने लोकतन्त्र में प्लेटो की आस्था डिगा दी। वह लोकतन्त्र किस काम का जो वैयक्तिक और वैचारिक स्वतन्त्रता का दम तो भरता है, किन्तु शारीरिक बल की उपेक्षा कर युद्ध में पराजित होता है और परतन्त्र बन जाता है। इससे भी भयंकर बात तो यह कि एक ओर तो लोकतन्त्र वैचारिक स्वतंत्रता का दम भरता है और दूसरी ओर एक बुद्धिवादी को तर्क का प्रचार करने के लिए मौत के घाट उतार देता है। इससे तो स्पार्टा की कठोर अधिनायकवादी शासन व्यवस्था कहीं अच्छी जो न तो पराजय की ग्लानि का अनुभव करती है और न बुद्धिवादी होने के लिए किसी को मृत्युदण्ड देती है।[२]

प्लेटो का मानना है कि कवि और कलाकार अपनी रचना दैवी प्रेरणा से करता है। उसके अंदर नये विचार, नयी भावनाऐं नया ज्ञान, भाव प्रबलता और नयी सर्जना क्षमता दैवी प्रेरणा से ही आती है। इस तरह दैवी प्रेरणा से जो काव्य या कला सामने आती है वह समाज के लिए उपयोगी होती है वे ऐसे कवियों की प्रशंसा करते हैं और उन्हें दैवी प्रेरणा को व्यक्त करने वाला मानते हैं। ऐसे कवियों को वे संत की तरह मानते हैं उसे ईश्वर के भावों को व्यक्त करने वाला प्रतिनिधि मानते हैं जिनके माध्यम से ईश्वर अपनी बात हम तक पहुँचाता है। ज्ञान का प्रसार करने वाला यह काव्य उत्कृष्ट काव्य कहलाता है। प्लेटो कहता है हम उस कविता का स्वागत करते हैं जो आनन्द प्रदान करने के साथ-साथ लोगों में संयम, सद्भाव, नैतिकता और सदाचार को भी प्रेरित करे। उसका उद्देश्य लोगों की आत्मा में संयम और न्यायप्रियता, कर्तव्यनिष्ठा एवं सद्भावना के संस्कार डालना तथा अन्याय, असंयम, दुराचार और अपराध की प्रवृत्तियों को दूर करना है।

प्लेटो संगीत में 'लय' की महता पर जोर देते हैं। 'लय' अच्छी और बुरी हो सकती है, लय किसी न किसी नियम के अनुसार चलती है। लय के समान काव्य अच्छा-बुरा हो सकता है। यह अच्छाई अच्छे चरित्रों और अच्छे कार्यो से आती है। रचना वही अच्छी होती है जिसमें सच्चे और अच्छे चरित्रों का वर्णन होता है।

प्लेटो एक दार्शनिक था पर वह कवि हृदय भी रखता है, वह आनन्द की बात तो करता है, पर उसका

आनन्द ऐन्द्रिक न होकर बौद्धिक था। उसका मानना था कि व्यक्तिगत रूप से व्यक्ति को सत्य प्राप्ति का प्रयास करना चाहिए और सार्वजनिक रूप से उसे सदाचारी होना चाहिए। वे ऐसी कविता को स्वीकार करते हैं जो मनुष्य और राज्य के उत्थान में सहायक हो। वे लिखते हैं "It shall be no argument that a poem or poet is charming admirable or even sacred-vain argument of aesthetes." [3] जो काव्य समाज और व्यक्ति के नैतिक तथा आध्यात्मिक जीवन का उत्थान करने वाला हो, वही काव्य सत्य है। प्लेटो दैवी प्रेरणा पर विश्वास करते थे। उनके विचार से इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं के पीछे दैवी प्रेरणा काम करती है। कवि भी दैवी प्रेरणा के वशीभूत होकर ही काव्य-रचना और कलाकार कला की सृष्टि करता है। उनका विचार है कि कवि के भीतर नयी उद्भावना और भावावेश कला से नहीं, वरन् दैवी प्रेरणा से ही आविर्भूत होता है। उत्कृष्ट काव्य उच्च भावनाओं, उच्च विचारों और ज्ञान का संचार करता है, अतः वह समाज के लिए उपयोगी होता है। इसके विपरीत निम्न कोटि का काव्य अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को ही नहीं निभाता और समाज में अनैतिकता और भ्रष्टाचार को फैलाता है तथा उच्च आदर्शो को क्षीण बनाता है। उनके प्रति अनास्था का भाव जगाता है। अतः समाज के लिए घातक है। वह ज्ञान, धर्म, नीति और ईश्वर-विरोधी होने से अग्राह्य है। कवि की कविता भले आदमियों को भी प्रभावित करती है और उन्हें भी धर्म और नीति के मार्ग से विचलित कर सकती है। अतः प्रभावशाली होने के कारण वह भयावह है। पर इसका यह अर्थ नहीं कि वे कवियों की निन्दा करते हैं। वे उन्हें परमात्मा या दैवी भावना को व्यक्त करने वाला मानते हैं। वे उन्हें सन्तों और पैगम्बरों की कोटि में रखते हैं और यह मानते हैं कि उनके माध्यम से परमात्मा स्वयं हमसे बात करता है। [4]

निकृष्ट काव्य

प्रश्न उठता है कि जब प्लेटो कविता को दैवी प्रेरणा मानता है तो उसे अपने आदर्श राज्य से बहिष्कृत क्यों करता है। प्लेटो का मानना है कि अधिकांश कवि दैवी प्रेरणा से कवि होने की सामार्थ्य तो हासिल कर लेते हैं पर वे कविता में सच्चाई, वास्तविकता और तर्क को स्थान नहीं देते। उनका काव्य वासना और उत्तेजना को भड़काने वाला, अनैतिक, असंयत, काल्पनिक, अतिरंजित, भावुक, अज्ञान से भरा होता है। ऐसी कविता शोक, दुःख, क्रोध की भावनाओं को उत्तेजित करती है, वह आकर्षक रूप में रचित होकर नागरिक को असंयत, उद्दंड, क्रोधी, बनाती है और समाज एवं राज्य के पतन का कारण बनती है। उसके वर्णन सच्चे, वास्तविक और तार्किक नहीं होते ।

वास्तव में प्लेटो कवि हृदय था और वह प्रारंभ में होमर का प्रशंसक था, वह रिपब्लिक में लिखता है 'अपने यौवन काल में 'होमर' के प्रति मेरे मन में गहरा श्रद्धा मिश्रित भय और प्रेम रहा है। उनके संबंध में कुछ कहते अब भी मेरे शब्द ओठों पर लड़खड़ाते हैं। वह मोहक त्रासदी के महानतम नेता है, गुरू हैं। पर सत्य तो सत्य ही है। सत्य की अपेक्षा व्यक्ति को अधिक महत्व नहीं दिया जा सकता।[5] और सत्य यह है कि 'होमर' आदि की रचनाओं में देवता भी कायर, लम्पट, क्रूर, लोभी चित्रित हुए हैं। नायकों के चरित्र भी कमजोरी से भरे हैं। उसमें ऐसे अंश आते हैं जो भय, भीरूता और कायरता के भाव पैदा करते हैं। दुष्ट विजयी और सज्जन दुख प्राप्त करते हैं। दुखान्त नाटकों में हत्या, कलह, विलाप आदि और सुखान्त नाटकों में अभद्रता, मसखरापन आदि दर्शकों में हीन भावना जागृत करते हैं। दुखान्त नाटक को देखकर दर्शक की क्षुद्र वासनाएँ उभरती हैं।

आनन्द ऐन्द्रिक न होकर बौद्धिक था। उसका मानना था कि व्यक्तिगत रूप से व्यक्ति को सत्य प्राप्ति का प्रयास करना चाहिए और सार्वजनिक रूप से उसे सदाचारी होना चाहिए। वे ऐसी कविता को स्वीकार करते हैं जो मनुष्य और राज्य के उत्थान में सहायक हो। वे लिखते हैं "It shall be no argument that a poem or poet is charming admirable or even sacred-vain argument of aesthetes." [3] जो काव्य समाज और व्यक्ति के नैतिक तथा आध्यात्मिक जीवन का उत्थान करने वाला हो, वही काव्य सत्य है। प्लेटो दैवी प्रेरणा पर विश्वास करते थे। उनके विचार से इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं के पीछे दैवी प्रेरणा काम करती है। कवि भी दैवी प्रेरणा के वशीभूत होकर ही काव्य-रचना और कलाकार कला की सृष्टि करता है। उनका विचार है कि कवि के भीतर नयी उद्भावना और भावावेश कला से नहीं, वरन् दैवी प्रेरणा से ही आविर्भूत होता है। उत्कृष्ट काव्य उच्च भावनाओं, उच्च विचारों और ज्ञान का संचार करता है, अतः वह समाज के लिए उपयोगी होता है। इसके विपरीत निम्न कोटि का काव्य अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को ही नहीं निभाता और समाज में अनैतिकता और भ्रष्टाचार को फैलाता है तथा उच्च आदर्शो को क्षीण बनाता है। उनके प्रति अनास्था का भाव जगाता है। अतः समाज के लिए घातक है। वह ज्ञान, धर्म, नीति और ईश्वर-विरोधी होने से अग्राह्य है। कवि की कविता भले आदमियों को भी प्रभावित करती है और उन्हें भी धर्म और नीति के मार्ग से विचलित कर सकती है। अतः प्रभावशाली होने के कारण वह भयावह है। पर इसका यह अर्थ नहीं कि वे कवियों की निन्दा करते हैं। वे उन्हें परमात्मा या दैवी भावना को व्यक्त करने वाला मानते हैं। वे उन्हें सन्तों और पैगम्बरों की कोटि में रखते हैं और यह मानते हैं कि उनके माध्यम से परमात्मा स्वयं हमसे बात करता है। [4]

निकृष्ट काव्य

प्रश्न उठता है कि जब प्लेटो कविता को दैवी प्रेरणा मानता है तो उसे अपने आदर्श राज्य से बहिष्कृत क्यों करता है। प्लेटो का मानना है कि अधिकांश कवि दैवी प्रेरणा से कवि होने की सामार्थ्य तो हासिल कर लेते हैं पर वे कविता में सच्चाई, वास्तविकता और तर्क को स्थान नहीं देते। उनका काव्य वासना और उत्तेजना को भड़काने वाला, अनैतिक, असंयत, काल्पनिक, अतिरंजित, भावुक, अज्ञान से भरा होता है। ऐसी कविता शोक, दुःख, क्रोध की भावनाओं को उत्तेजित करती है, वह आकर्षक रूप में रचित होकर नागरिक को असंयत, उद्दंड, क्रोधी, बनाती है और समाज एवं राज्य के पतन का कारण बनती है। उसके वर्णन सच्चे, वास्तविक और तार्किक नहीं होते ।

वास्तव में प्लेटो कवि हृदय था और वह प्रारंभ में होमर का प्रशंसक था, वह रिपब्लिक में लिखता है 'अपने यौवन काल में 'होमर' के प्रति मेरे मन में गहरा श्रद्धा मिश्रित भय और प्रेम रहा है। उनके संबंध में कुछ कहते अब भी मेरे शब्द ओठों पर लड़खड़ाते हैं। वह मोहक त्रासदी के महानतम नेता है, गुरू हैं। पर सत्य तो सत्य ही है। सत्य की अपेक्षा व्यक्ति को अधिक महत्व नहीं दिया जा सकता।[5] और सत्य यह है कि 'होमर' आदि की रचनाओं में देवता भी कायर, लम्पट, क्रूर, लोभी चित्रित हुए हैं। नायकों के चरित्र भी कमजोरी से भरे हैं। उसमें ऐसे अंश आते हैं जो भय, भीरूता और कायरता के भाव पैदा करते हैं। दुष्ट विजयी और सज्जन दुख प्राप्त करते हैं। दुखान्त नाटकों में हत्या, कलह, विलाप आदि और सुखान्त नाटकों में अभद्रता, मसखरापन आदि दर्शकों में हीन भावना जागृत करते हैं। दुखान्त नाटक को देखकर दर्शक की क्षुद्र वासनाएँ उभरती हैं।

ISSN 2395-051X

प्लेटो अपने राज्य से उस काव्य के बहिष्कार की बात करता है जो उसके आदर्श राज्य को कमजोर, स्त्रैण, भावुक, धूर्त, वंचक और भोगी बनाता है। ऐसे काव्य को वह निकृष्ट काव्य कहता है।

प्लेटो का अनुकृति सिद्धान्त-

प्लेटो कला को अनुकृति मानते हैं। उनके विचार से वस्तु के तीन रूप होते हैं, आदर्श, वास्तविक और अनुकृत। सृष्टि या प्रकृति का एक आदर्श रूप सृष्टा अर्थात् ईश्वर की कल्पना या इच्छा में रहता है जब यह प्रकृति या सृष्टि उस आदर्श के अनुरूप रची जाती है तो वह ईश्वर के आदर्श रूप की वास्तविक अनुकृति होती है इस वास्तविक अनुकृति का वर्णन या चित्रण जब कवि या कलाकार द्वारा किया जाता है तो वह अनुकृति की अनुकृति होती है। अतः यह रचना सत्य से तिगुनी दूर होती है। प्लेटो कहता है कि कवि या कलाकार जिस विषय का वर्णन करता है, आवश्यक नहीं कि वह उस विषय की जानकारी भी रखता हो। कवि युद्ध का वर्णन करता है पर वह युद्ध कला नहीं जानता, जिन अस्त्र-शस्त्रों का वर्णन करता है उनके प्रयोग से वह अनभिज्ञ होता है, डाक्टर, का वर्णन करता है परन्तु उसे डाक्टरी नहीं आती, साधु संतो का वर्णन करता है परन्तु जरूरी नहीं कि उसे आध्यात्म का ज्ञान हो। अतः उसका चित्रण काल्पनिक और सतही होता है, वह सत्य की काल्पनिक अनुकृति होती है अतः सत्य से तीन गुना दूर होता है। प्लेटो कहता है कि ईश्वर ही सत्य है और उसने एक मानसिक अखण्ड सत्य की रचना की। यह प्रकृति या सृष्टि उस सत्य की अनुकृति है, कवि और कलाकार इसी अनुकृति से प्रेरणा ग्रहण करता है और रचना करता है- ''A nd so, it the tragic poet is an imitater, he too is thrice removed from truth and so are all other imetators.'' [6]

प्लेटो अनुकरण के दो पक्ष मानता है- एक वह तत्व जिसका अनुकरण किया जाता है और दूसरा अनुकरण का स्वरूप। अगर वह तत्व मंगलकारी है तो अनुकरण पूर्ण एवं उत्तम है, तो वह स्वागत योग्य है, यदि वह अमंगलकारी है तो अनुकरण हानिकारक है एवं सत्य से दूर है। प्लेटो अनुकरण की प्रवृत्ति को अज्ञानता मानते हैं। वे पलंग का उदाहरण देते हैं- जैसे पलंग का मूलकर्ता ईश्वर है, बढ़ई उसका अनुकरण करता है और चित्रकार पलंग के वास्तविक रूप से परिचित न होते हुए भी उसका अनुकरण करता है और चित्र बनाता है इस तरह कला अज्ञान से उत्पन्न सत्य से तीन गुना दूर होती है। प्लेटो यहाँ स्पष्ट रूप से यह बतलाता है कि कवि सत्य का ज्ञाता भी नहीं होता। हम जिन कवियों की कृतियों से सम्मोहित हो जाते हैं वस्तुतः वे भी सत्य से तीन गुना दूर थी।

प्लेटो एक उदाहरण देकर समझाते हैं कि जैसे चर्मकार का चित्र बनाने वाला चित्रकार चर्म कला से अनभिज्ञ होता है फिर भी उसका चित्र वास्तविकता का भ्रम उत्पन्न करता है। वैसे ही होमर आदि कवि जो अपने काव्य में छायानुकरण करते हैं, केवल अनुकर्ता होते हैं और सत्य से उनका कोई सरोकार नहीं होता अतः कहा जा सकता है अनुकर्ता केवल बाह्य रूप का ज्ञाता होता है, सत्य का नहीं। इसलिए वह काव्य को 'कवि क्रीड़ा' मात्र मानता है --

"Imitation is only a kind of play of sport."

हालांकि प्लेटो कवि के लिए विषय से तादात्म्य अनिवार्य मानते हैं जिससे वह ऐसी रचना कर सके जो दर्शक या श्रोता पर अभीष्ट प्रभाव डाल सके । वह चाहता है कि कवि मानव स्वभाव का सच्चा चित्र इस प्रकार

प्रस्तुत करे कि उससे मानव स्वभाव में जो भी महान हो उसमें वृद्धि करे । वह कला में गहनता और पूर्णता की आशा करते हैं ।

"The right function of art is to put before the soul the images of what is intrinsically great and beautifull."

प्लेटो मानता है कि कवि यश और कीर्ति के लिए लिखता है । वह आत्मा के सत्य का उद्‌घाटन करने के लिए नहीं लिखता बल्कि लोकप्रियता के लिए उत्तेजक साहित्य की रचना करता है । ट्रेजेडी का कवि भी हमारे विवेक को नष्ट कर हमारी वासनाओं को जागृत करता है, उनका पोषण कर उन्हें पुष्ट करता है, इसलिए काव्य का सत्य वास्तविक सत्य से दूर रहता है ।

संदर्भ

1. इनसायक्लोपीडिया ब्रिटेनिका
2. पाश्चात्य काव्य देवेन्द्र नाथ शर्मा
3. डॉयलाग आफ प्लेटो
4. – वही——
5. रिपब्लिक-प्लेटो
6. डॉयलाग आफ प्लेटो